प्रेम बड़ा रसायन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

पुस्तकों का खूब अध्ययन कर लें, खूब अधिक ज्ञान प्राप्त कर लें, किन्तु यदि प्रेम का पाठ जीवन में नहीं पढ़ा तो सभी ज्ञान किसी काम के नहीं हैं। प्रेम का रसायन जिसके पास है वह पूजनीय है। घृणा और प्रेम एक—दूसरे के विरोधी हैं। हृदय में जब प्रेम का स्रोत प्रवाहित होता है तो सभी मनोमालिन्य धूल जाता है। इसी सम्बन्ध में कबीरदासजी ने कहा है—

पोथी पढ़ि—पढ़ि जग मुआ पण्डित भया न कोय,

ढ़ाई आखर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होय।

भागवत में उद्धव गोपी संवाद में गोपियों की प्रेमधारा में उद्धव की ज्ञान साधना बह जाती है। उद्धव गोपियों को ज्ञान का उपदेश करने के लिए आए थे किन्तु गोपियों ने उन्हें अपने प्रेम रस से सराबोर कर दिया। प्रेम आत्मा का गुण है। आत्मा अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन और अनन्त सुख का धाम है। सुख बाहरी वस्तु में नहीं है, सुख आत्मा में हैं। आत्मा में सुख का खजाना है। बाहर के पदार्थ जड़ हैं, जड़ में सुख नहीं है। जड़ पदार्थ नाशवान हैं। जो स्वयं नाशवान है वह दूसरों को कैसे सुख और प्रेम दे सकता है? सभी शास्त्रों में आत्मा को ही सुख का खजाना बताया गया है। प्रेम से कही गयी बात दूसरों के दिल को छू जाती है। दूसरों का हृदय परिवर्तित हो जाता है। घृणा को प्रेम से जितने का प्रयास करना चाहिए।

विश्व तरंगों से भरा पड़ा है। प्रेम की तरंगे ऐसी है जो सभी प्राणियों को प्रिय लगती है। प्रेम हिंसक को अहिंसक बना देता है। पशु—पक्षी भी प्रेम की भाषा को समझते हैं। यदि कोई व्यक्ति क्रोध से बात कहता है तो सामने वालों को भी क्रोध आ सकता है। किन्तु यदि वही व्यक्ति प्रेम से किसी को कुछ समझाता है तो बुरा आदमी भी उसकी बात मान लेता है। प्रेम में आकर्षण होता है। यह दूसरों को अपनी और खींच लेता है। प्रेम जीवित प्राणियों में पैदा होता है। प्रेम भाईचारा और विश्वबंधुत्व को बढ़ाता है।

एक देश दूसरे देश के साथ मित्रता तभी करता है जब दोनों में स्वाभाविक प्रेम हो। स्वार्थ के आधार पर किया गया प्रेम अधिक दिनों तक नहीं टिक सकता। उत्सव, पर्व और महोत्सव सभी धर्मों में प्रेम उत्पन्न करते हैं। चाहे किसी भी धर्म के उत्सव हों उस उत्सव पर मानव मात्र के प्रति प्रेम दिखलाना चाहिए। सभी साथ मिलकर उत्सव को मनायें इससे प्रेम बढ़ता है। भारतीय संस्कृति में सभी प्राणियों के प्रति सुख की

कामना की गयी है। वहां कहा गया है कि सभी सुखी होवें, सभी निरोग होवें, सभी एक–दूसरे से प्रेम करें। कोई किसी से द्वेष न करें।

जिस व्यक्ति में लघुता होती है, जिस व्यक्ति में विनम्रता होती है, जिस व्यक्ति में निरहंकारता होती है, उस व्यक्ति का सामाजिक विकास सांस्कृतिक विकास बहुत अधिक होता है। ऐसा व्यक्ति सहनशील और दूसरों को सम्मान देने वाला होता है। किन्तु जिस व्यक्ति में अहंकार होता है उसका धीरे–धीरे पतन हो जाता है। भगवान् श्रीरामचन्द्र और लंकापति रावण का दृष्टान्त इस संबंध में विचारणीय है। जब भगवान् राम और रावण की सेनाएं आमने–सामने आकर खड़ी हुई तो भगवान् राम पैदल, बिना अस्त्र–शस्त्र के भालू–बन्दरों की सेना के साथ खड़े थे। दूसरी तरफ रावण रथ पर सवार और चतुरंगड़ी सेना के साथ अहंकार से युक्त युद्ध क्षेत्र में भगवान् राम को ललकार रहा था। यह युद्ध लघुता और प्रभुता का युद्ध था, जिसमें लघुता विजयी हुई और प्रभुता पराजित।

लघुता का गुण शिक्षा, विद्या और दूसरों को सम्मान देने से प्राप्त होता है। विद्या को प्राप्त करने के बाद भी यदि लघुता नहीं आई तो समझना चाहिए कि विद्या का वास्तविक मूल्य अभी नहीं प्राप्त हुआ। जिस समय वृक्ष में फल आता है तो वृक्ष की शाखाएं नम जाती है। इसी प्रकार विद्या और विनय से सम्पन्न व्यक्ति नम्र बन जाता है। परन्तु कुछ लोग ऐसे है कि विद्या की प्राप्ति के बाद भी उनमें नम्रता न आकर अहंकार आ जाता है और यह अहंकार उनके विनाश का कारण होता है। वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत और आगमों में यही बताया गया है कि मानव को विनयशील होना चाहिए।

जिस समय रावण मृत्यु शय्या पर पड़ा हुआ था उस समय भगवान् राम ने लक्ष्मण से कहा कि रावण बहुत ज्ञानी है। उसके पास जाकर कुछ ज्ञान की शिक्षा लीजिए। लक्ष्मणजी जब अपने बड़े भाई की बात स्वीकार कर रावण के पास गये और उसके सिर के पास खड़े होकर ज्ञान प्राप्त करना चाहा तो रावण ने अपनी आंखे ही नहीं खोली। लक्ष्मणजी निराश होकर लौट आये और भगवान् राम को पूरा वृतान्त बता दिया। तब भगवान् राम ने लक्ष्मण से कहा कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए लघुता और विनम्रता आवश्यक है। पुनः जाकर रावण के पैर के पास खड़े होकर ज्ञान की याचना करना। लक्ष्मणजी जब रावण के पास गये और उसके पैर के पास खड़े हुए तो रावण ने लक्ष्मण को अनेक विद्याओं का ज्ञान दिया।